सूरदास जयंति पर विशेषः

'तुम मेरी राखो लाज हरि'

सूरदास भारतीय साहित्य के आकाश पर दीप्त वह सूर्य है जिसकी प्रभा सदियाँ बीतने पर आज भी उतनी ही प्रखर है जितनी उस काल में थी एवं निश्चय ही आगे भी रहेगी। जैसे सूर्य का तेज कभी कम नहीं होता सूर का काव्य भी कालजयी एवं अक्षुण्ण है। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है कि 'सूर सूर्य, तुलसी शशि, उडुगन केशवदास, बाकि सब खद्योत सम जहं तंह करहि प्रकाश' अर्थात् भारतीय साहित्य में सूर सूर्य, तुलसी चन्द्रमा एवं केशवदास नक्षत्र है, अन्य शेष कवि तो उन जुगनूओं की तरह हैं जो समय–समय पर प्रकाश बिखेर कर विलुप्त हो गए। निश्चय ही सूर विलक्षण काव्य प्रतिभा के धनी थे। जन्मांध होने एवं मात्र छः वर्ष की उम्र में घरवालों की प्रताड़ना से दुःखी होकर गृह त्याग देने वाला सूर भारतीय काव्य जगत को हीरे के कणों से भी बहूमूल्य पद देगा, ऐसी तो किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। इसीलिए संसार के प्रबुद्ध, अनुभवी लोग कह गये हैं एवं स्वयं सूर ने भी अपने एक पद 'चरण कमल बंदौ हरि राई' में लिखा है कि प्रभुकृपा असाध्य को भी साध्य एवं अलभ्य को लभ्य बना देती है। उसकी कृपा हो जाऐ तो लंगड़ा पर्वतों को लांघ लेता है, मूक वाचाल बन जाता है, रंक सर पर छत्र रखकर चक्रवती सम्राट के समकक्ष शक्तिशाली बन जाता है एवं अंधे तक को सब कुछ दिखाई देने लगता है। यह प्रभु कृपा ही थी कि सूर ने अंधे होने पर भी मन की अगोचर आंखों से वह सब कुछ देख लिया जिसे आंख वाले भी नहीं देख सकते। सूर का पद 'शोभित कर नवनीत लिए, घुटरन चलत रेनु तन मण्डित मुख दधि लेप किए' सूर ने किन आँखों से अनुभूत कर लिखा होगा ?

सूर का एक–एक पद रस सागर में निमग्न है। 'मैया मोहि दाऊ बहुत खिजायो, मौसों कहत मोल को लीनो ताहि जसुमति कब जायो', 'मैंया मैं नहीं माखन खायो', मैया मोरी कबहु बढ़ेगी चोटी' आज भी श्रोताओं को आत्म विभोर कर देते हैं। कहते हैं कि वे जब तानपुरे पर अपने पद गाते तब स्वयं कृष्ण बालरूप में उनके सामने आकर बैठ जाते थे। जिनके श्रोता स्वयं आनंदघन कृष्ण हो उसके गीतों से भला रस क्यों न बरसेगा! सूर का समुचित इतिहास उपलब्ध नहीं है। 'आइन–ए–अकबरी' एवं 'मुंशीयत–ए–अबुलफ़जल' में संक्षिप्त उल्लेख अवश्य है। यह दोनों ग्रंथ अकबर के जमाने में लिखे गए थे। इन ग्रंथों में सूर का विवेचन अप्रत्यक्ष रूप से यह सिद्ध करता है कि अकबर एक धर्म निरपेक्ष सम्राट था। कहते हैं उन्होंने सूर को अपने दरबार में बुलाकर अभिनन्दन भी किया था। इन्हीं ग्रंथों के अनुसार सूर्य जन्मांध थे। सूर के जन्मांध होने के ज्यातिषीय कारण जानने की जिज्ञासा के चलते मैंने उनका जन्मांग अनेक स्त्रोतों से प्राप्त करने का प्रयास किया पर सूर की जन्म तिथि एवं वर्ष कहीं भी उद्धृत नहीं हैं प्रसंगवश मैं लिखना चाहूँगा कि जन्मांध व्यक्तियों के बहुधा दूसरा घर सूर्य से पीड़ित होता है एवं चूंकि दूसरे घर में सूर्य सुबह चार से छः के मध्य होता है अतः यह तकरीबन तय है कि सूर का जन्म भोर में हुआ। भोर में जन्म लेने वाले जातक बहुधा संघर्षशील एवं आशावादी होते हैं। उनका सकारात्मक भाव एवं आशा बलवती होती है एवं यही तथ्य अनेक बार उन्हें अद्भुतकर्मा बनाती है। यही कारण था कि सूर ने जीवन के गहन अंधेरे एवं दर्द को सृजन की खाद बनाकर अमर साहित्य रच दिया। 18 वर्ष की उम्र में वे यमुना के किनारे पुष्टिमार्गीय संत वल्लभाचार्य से मिले जो कालांतर में उनके गुरु भी बने। उन्हीं की प्रेरणा से उन्होंने गीता एवं श्रीमद्भागवत् जैसे ग्रंथों का सुन–सुन कर अध्ययन किया। कहते हैं एक दो बार सुनने से ही यह दोनों ग्रंथ उन्हें याद हो गए। शीघ्र ही वे घूम–धूमकर इन ग्रंथों के अंशों को लोगों को सुनाने लगे। प्रसंगवश आज के समय में जहाँ नई पीढ़ी शैक्षिक सोपानों पर चढ़ने के लिए अभिभावकों से अनेक सुख–सुविधाओं की मांग करती है, सूर उनके लिए अनुकरणीय उदाहरण है। शैक्षिक अथवा किसी भी क्षेत्र में उत्कर्ष छूने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है मन की जिज्ञासा, ललक एवं उत्कट पुकार न कि उपलब्ध सुख–सुविधाएँ। सूर जिस आत्म–शिखर पर अवस्थित हुए उसका मार्ग उन्होंने तमाम अवरोधों के बावजूद मात्र आत्मशक्ति एवं प्रबल जिज्ञासा के आधार पर पूरा कर दिखाया। प्रकृति ने उससे क्या नहीं छीना एवं मनुष्यता को उसने क्या नहीं दिया। हमारे देश में ऐसे उदाहरण भी मौजूद है जब आततायी राजाओं ने दुर्लभ ग्रंथों को जलाने का आदेश दिया तो जनता ने उन्हें कंठस्थ कर लिया। वे ग्रंथ मौखिक–दर–मौखिक पीढ़ियों तक चलते गये। वे महामानव मनुष्य की अपरिमित शक्तियों, जीवट एवं साहस के दुर्लभ उदाहरण है।

सूर ताउम्र अविवाहित रहे। अपने पद सुना–सुना कर ही उन्होंने जीवन यापन किया। उनका सम्पूर्ण जीवन करीब–करीब ब्रज में ही बीता एवं सम्पूर्ण काव्य सृजन भी उन्होंने ब्रजभाषा में ही किया। उनके द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथों में 'सूरसागर', 'सूर सारावली' एवं 'साहित्य लहरी' प्रमुख है। कहते हैं 'सूरसागर' में मूलतः एक लाख पद थे लेकिन अब मात्र 8000 मिलते हैं। यह सभी पद प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से उनकी उत्कट कृष्ण भक्ति के जीवंत प्रमाण है। यह भी अपूर्व संयोग है कि सूर ने सम्पूर्ण सृजन एक कुटिया में किया। यह कुटिया 'गोवर्धन' में आज भी है एवं कहते हैं सूर इस कुटिया में 73 वर्ष तक रहे। मेरे एक मित्र पूर्व न्यायाधीश एवं प्रतिष्ठित कवि श्री मुरलीधर वैष्णव ने एक बार मुझे बताया कि वे हर वर्ष गोवर्धन परिक्रमा करते हैं एवं परिक्रमा के बीच ही यह कुटिया आती है। आप जब कुटिया में प्रवेश करते हैं तो लगता है आपकी आत्मा आलोकित हो उठी है। आप अनायास 'चार्जड्' हो जाते हैं। वहीं कुटिया के बाहर एक जीर्ण वृक्ष भी है जो अब झाड़ बन गया

है। कहते हैं सूर पदों को यहीं बैठकर सुनाते थे। यह भी अद्‌भुत संयोग है कि भारतीय इतिहास के भक्ति काल में कृष्ण भक्ति की अलख जगाने वालों में सूर, चैतन्य एवं मीरा प्रमुख थे एवं इसी काल में कबीर, नानक, तुलसी, रैदास, तुकाराम एवं रामदास जैसे महान सत पैदा हुए। यह वह समय था जब देश में भक्ति की गंगा बह चली थी।

अपने उत्तरकाल में सूर मानो मुक्ति के लिए छटपटाने लगे थे। उनकी आत्मा कृष्ण–दर्शन को विकल हो उठी थी। उनके अविस्मरणीय पदों, 'प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो.....अबकि बेर मोहे पार उतारो नहि पन जात धरौ' एवं 'अंखिया हरि दर्शन को प्यासी' में उनकी अंतर–क्षुधा महसूस की जा सकती है। सूर के एक पद 'तुम मेरी राखो लाज हरि' की अंतिम पंक्ति 'सूर पतित को बेगि उबारो अब मोरी नाव भरी' सुनकर भी सूर की आत्म–विकलता महसूस की जा सकती है। सूर के इसी पद को हाल ही 'राजस्थान रत्न' से नवाजे लोकविख्यात ग़जल गायक स्व. जगजीतसिंह ने क्या खूब गाया था। इस भजन को गाते हुए लगता है जगजीतसिंह के ज़हन में बसा दर्द सूर की दर्द–सरिता के प्रवाह में निमग्न हो गया। शायद अच्छी गायकी इसी का नाम है कि गायक लेखक की अंतर–पीड़ा को अपनी पीड़ा में समरस कर गायकी को बुलंदियों पर पहुँचाए। अपुष्ट प्रमाणों के अनुसार सूर का काल 1478 से 1583 के मध्य था। कहते हैं सूर 105 वर्ष जीये। वैसे भी ऐसे महान कवियों की उम्र एवं काल कहाँ महत्वपूर्ण है। वे न तो जन्मते हैं न मरते हैं वे तो मात्र पृथ्वी पर किसी धूमकेतु की तरह उदित होते हैं। अपने मधुर काव्य पदों में सूर आज भी अमर है। भारतीय भक्ति साहित्य के इतिहास में सूर किसी काव्यावतार से कम नहीं है।

लेखक

(हरिप्रकाश राठी)
094141–32483